0				0						٠,	C -4
तरक़्क़ी	तरक़्क़ी	आह्लाद	आह्नाद	फ्रीज	फ्रीज	मग्ज	मग्ज	हृत्स्थल	हत्स्थल	सिर्फ	सिर्फ
ज़्यादा	ज़्यादा	ब्राह्मण	ब्राह्मण	ह्रितिक	हितिक	सम्यग्ज्ञान	सम्यग्ज्ञान	ज्योत्स्रा	ज्योत्स्ना	व्हिस्की	व्हिस्की
मन्ज़ूर	मन्जूर	मिस्त्री	मिस्त्री	एल्ज़े	एल्जे	दिग्दर्शन	दिग्दर्शन	ईषत्स्पृष्ट्	ईषत्स्पृष्ट्	इश्क	इश्क
इलेक्ट्रान	इलेक्ट्रान	दुष्प्रह्य	दुष्प्रह्य	उत्त्य	उत्त्य	पंक्ति	पंक्ति	उत्स्रुत	उत्स्रुत	प्रश्न	प्रश्न
स्ट्रीटकार	स्ट्रीटकार	अद्भुत	अद्भुत	उत्य	उत्य	मंगलवार	मंगलवार	सद्गति	सद्गति	रुश्द	रुश्द
छुट्टी	छुट्टी	इल्ज़ाम	इल्जाम	रत्न	रत्न	दुर्लंघ्य	दुर्लंघ्य	सद्गन्थ	सद्ग्रन्थ	वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य
महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अक्षरे	अक्षरे	सज़्स	सज़्स	पच्चीस	पच्चीस	उद्घाटन	उद्घाटन	ओष्ठ्य	ओष्ठ्य
ज्येष्ठ	ज्येष्ठ	ज्ञान	ज्ञान	एज्जा	एज्जा	अच्छा	अच्छा	ज़िद्दी	ज़िद्दी	मिस्त्री	मिस्त्री
दर्ष्टांत	दर्षांत	मौके	मीके	ब्यर्थे	ब्यर्थे	उज्ज	उज़	प्रसिद्ध	प्रसिद्ध	आह्वान	आह्वान
चिट्ठी	चिट्ठी	कैंटोमेंट	कैंटोमेंट	तरक़्क़ी	तरक़्की	संस्कृत	संस्कृत	उद्बोध	उद्बोध	आह्लाद	आह्नाद
वाङ्मय	वाङ्मय	छूट कुछ	छूट कुछ	फ्रैक्चर	फ्रैक्चर	हिंस्र	हिंस्र	द्रव	द्रव	ह्रास	हास
वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य	करेंट	करेंट	डॉक्टर	डॉक्टर	छुट्टी	 ੁਉ	दारिद्य	दारिद्र्य	अंकुड़ा	अंकुड़ा
पुनस्स्थापना	पुनस्स्थापना	राष्ट्रून	राष्ट्रुन	इलेक्ट्रॉन	इलेक्ट्रॉन	चिट्ठी	चिट्ठी	अध्रुव	अध्रुव	अंतर्निहित	अंतर्निहित
स्वास्थ्य	स्वास्थ्य	कॉफी	कॉफी	रक्त	रक्त	विशाखपट्नम	विशाखपट्नम	मंज़ूर	मंज़ूर	अन्तः	अन्त:
कम्प्यूटर	कम्प्यूटर	हिंदू-मुस्लिम	हिंदू-मुस्लिम	वक्ल	वक्त्र	ट्रैन	ट्रैन	मंत्री	मंत्री	अंतर्वेशन	अंतर्वेशन
सान्ध्य	सान्ध्य	करणाऱ्या	करणाऱ्या	युक्त्यभास	युक्त्यभास	सुपाठ्य	सुपाठ्य	स्वातंत्र्य	स्वातंत्र्य	अग्नि	अग्नि
इ्ज़त	इज़्जत	स्रोह	स्नेह	वक्फ़	वक्फ	लड्डू	लडू	द्वंद्व	द्वंद्व	अद्भुत	अद्भुत
उज्ज्वल	उज्ज्वल	श्री	श्री	शुक्ल	शुक्ल	ब्रह्मण्य	ब्रह्मण्य	उन्नीस	उन्नीस	छुछुंदर	छुछुँदर
प्राप्त्याशा	प्राप्त्याशा	स्त्री	स्त्री	रिक्शा	रिक्शा	उत्क्रम	उत्क्रम	इंस्टिट्यूट	इंस्टिट्यूट	हुंकार	हुंकार
इकत्तीस	इकत्तीस	ध्ड्यां	ध्ड्यां	पक्ष	पक्ष	उत्क्षेप	उत्क्षेप	उन्हें	उन्हें	हित इच्छुक	हित इच्छुक
सत्नह	सत्रह	शक्ति	शक्ति	लक्ष्मी	लक्ष्मी	विद्युत्प्रहक	विद्युत्ग्रहक	दीन्ह्यो	दीन्ह्यो	कुरीं	कुर्री
पद्म	पदा	महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अभक्ष्य	अभक्ष्य	महत्त्व	महत्त्व	नैप्स्यून	नैप्स्यून	कुल्हिया	कुल्हिया
विद्यार्थी	विद्यार्थी	कट्टू	कटू	दिक्स्थापन	दिक्स्थापन	पत्थर	पत्थर	प्राप्त	प्राप्त		
उन्नीस	उन्नीस	रूप	रूप	सख़्त	सख़्त	विद्युत्दर्शी	विद्युत्दर्शी	सब्ज़ी	सब्जी		
पश्चिम	पश्चिम	ુંદ્ધ	हूँ	अख्त्यार	अख्त्यार	पत्नी	पत्नी	छब्बीस	छब्बीस		
श्रीलंका	श्रीलंका	बुत्तो	बुत्तो	ज़ख़्म	ज़ख़	सपत्य	सपत्न्य	मार्किट	मार्किट		
विश्वविद्यालय	विश्वविद्यालय	बार्गी	बार्गी	ख्रिष्टां	ख्रिष्टां	उत्प्रवास	उत्प्रवास	दुर्ज़ेय	दुर्ज्ञेय		
स्नान	स्नान	कुंग	कुंग	फ़रव	फ़ख़	त्याहिक	त्र्याहिक	उर्दू	उर्दू		
बुद्ध	बुद्ध	हूप	हूप	अग्ग्रास	अग्ग्रास	विद्युतशक्ति	विद्युतशक्ति	निर्द्वन्द्व	निर्द्वन्द्व		

चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्गवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ।। अर्थात तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात निकास पद्धति होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागित जाते हैं जो ख़ुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो ख़ुद ढूंढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्गवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ ॥ अर्थात तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यृह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की याला करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यालाएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात निकास पद्धित होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागित जाते हैं जो ख़ुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो ख़ुद ढूंढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

गुदगुदी | शायरी | टेक ज्ञान | Hinglish News | गेम्स | गरमा गरम | Travel | Deals | Property | चुनाव

सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके, मिडकैप-स्मॉलकैप में उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा निकालने पर देना होगा टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की मेहनत, चीन से आया तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़ में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के सामने लगे 'प्रियंका-प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

उप्र में अंधेरा दूर करने के लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो अबोध बच्चियों से दृष्कर्म सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके, मिडकैप-स्मॉलकैप में उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा निकालने पर देना होगा टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की मेहनत, चीन से आया तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़ में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के सामने लगे 'प्रियंका-प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

उप्र में अंधेरा दूर करने के लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो अबोध बच्चियों से दष्कर्म

119 देशों के बच्चों ने UAE का राष्ट्रगान गाकर बनाया रिकॉर्ड

केवल 6 सेकेंड में 'आउट ऑफ स्टॉक' हुआ जियाओमी रेडमी नोट

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हैंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़े - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़े - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

तीन मिररलेस कैमरे के साथ आया निकॉन

Publish Date:Mon, 01 Dec 2014 10:12 AM (IST) | Updated Date:Mon, 01 Dec 2014 11:35 AM (IST)

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमश: 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्यू1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यू 1 दुनिया का पहला वाटरप्रूफ और शॉकप्रूफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मूविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दूसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेंट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंट्रास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीडी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमश: 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्य्1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यु 1 दनिया का पहला वाटरप्रुफ और शॉकप्रुफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मुविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5मिमी $\sqrt{\frac{3.5-5.6}{6}}$ किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू 1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंटास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीड़ी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

बेंगलुरू। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत

बेंगलुरू। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत

फोटो में देखें, क्या हुआ जब ग्रांड फैशन इंवेट में Bollywood Divas ने रैंप पर उतरकर बिखेरे जलवे

गीरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवत: खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट।।

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रक्खे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी नदियों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करें। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डील डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी किहए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नहीं होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झूँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को

गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवत: खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट॥

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रक्खे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी निद्यों में रेत और फूल फिलयाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करैं। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी किहए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नहीं होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झूँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को

परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं।।

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं।।

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-वाप और सब घर के लोग कुँवर उदेभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसें भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदेभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं॥

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं॥

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसें भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झुल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वही झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहुत सी नाँह-नूह की और कहा -

Consonant spacing

पपकपवपवकवव पपखपवपवखवव पपगपवपवगवव पपघपवपवघवव पपङपवपवङवव पपचपवपवचवव पपछपवपवछवव पपजपवपवजवव पपझपवपवझवव पपञपवपवञवव पपटपवपवटवव पपठपवपवठवव **uusuauasaa** पपढपवपवढवव पपणपवपवणवव पपतपवपवतवव पपथपवपवथवव पपदपवपवदवव पपधपवपवधवव पपनपवपवनवव **uuuuauauaa** पपफपवपवफवव पपबपवपवबवव पपभपवपवभवव **чинчачанаа** पपयपवपवयवव पपरपवपवरवव पपलपवपवलवव पपळपवपवळवव **uuauauaaa** पपशपवपवशवव **uuuuauauaa** पपसपवपवसवव

पपहपवपवहवव पपकपवपवक्षवव पपखपवपवख़वव पपग़पवपवग़वव पपज़पवपवज़वव पपड़पवपवड़वव पपढ़पवपवढ़वव पपफ़पवपवफ़वव पपफ़पवपवक़वव पपथ़पवपवस्वव पपक्षपवपवक्षवव पपझपवपवझवव

Vowel spacing

पपअपवपवअवव पपञ्जेपवपवञ्जेवव पपॲपवपवॲवव पपइपवपवइवव पपर्डपवपवर्डवव **पपउपवपव**उवव पपऊपवपवऊवव **чч**ए**ч**वपवएवव पपऐपवपवऐवव पपऍपवपवऍवव पपऐपवपवऐवव पपआपवपवआवव पपओपवपवओवव पपऔपवपवऔवव **чч**жчачажаа पपऋपवपवऋवव पपल्पवपवल्वव पपॡपवपवॡवव

Rakar spacing

पपक्रपवपवक्रवव

पपख्रपवपवख्रवव

पपग्रपवपवग्रवव पपञ्चपवपवञ्चवव पपङ्गपवपवङ्गवव पपच्चपवपवच्चवव पपछुपवपवछुवव पपज्रपवपवज्रवव पपझपवपवझवव पपञ्जपवपवञ्जवव पपट्रपवपवट्रवव **чидчачадаа** पपडूपवपवडूवव पपढूपवपवढूवव पपण्रपवपवण्रवव पपत्रपवपवत्रवव पपथ्रपवपवथ्रवव पपद्रपवपवद्रवव पपभ्रपवपवभ्रवव पपन्नपवपवन्नवव **ч**чучачауаа पपफ्रपवपवफ्रवव पपब्रपवपवब्रवव पपभ्रपवपवभ्रवव पपम्रपवपवम्रवव पपग्रपवपवग्रवव पपरूपवपवरूवव पपत्रपवपवत्रवव पपव्रपवपवव्रवव पपश्रपवपवश्रवव पपष्रपवपवष्रवव पपस्रपवपवस्रवव पपह्रपवपवह्नवव

पपळ्रपवपवळ्रवव पपक्षपवपवक्षवव पपञ्चपवपवञ्चवव

Conjunct spacing

पपक्तपवपवक्तवव पपदूपवपवदूवव पपद्रपवपवद्रवव पपड्यपवपवड्यवव पपज्जपवपवज्जवव पपज्थपवपवज्थवव पपज्यपवपवज्यवव पपज्सपवपवज्सवव पपछ्यपवपवछ्यवव पपट्यपवपवट्यवव पपठ्यपवपवठ्यवव पपड्यपवपवड्यवव पपढ्यपवपवढ्यवव पपट्टपवपवट्टवव पपटूपवपवटूवव पपठूपवपवठूवव पपड्डपवपवड्डवव पपड्टपवपवडूवव पपढ्रपवपवढूवव पपत्तपवपवत्तवव पपत्खपवपवत्खवव पपत्थपवपवत्थवव पपत्नपवपवत्नवव पपत्सपवपवत्सवव पपत्यपवपवत्यवव पपद्धपवपवद्धवव पपद्गपवपवद्गवव पपद्वपवपवद्भवव पपद्धपवपवद्भवव

पपद्वपवपवद्ववव पपद्धपवपवद्धवव पपद्ध्यपवपवद्ध्यवव पपद्मपवपवद्मवव पपद्ध्यपवपवद्ध्यवव पपद्दपवपवद्दवव पपश्चपवभवव पपन्मपवपवन्मवव पपल्जपवपवल्जवव पपल्थपवपवल्थवव पपत्भपवपवत्भवव पपल्मपवपवल्मवव पपल्यपवपवल्यवव पपत्मपवपवत्मवव पपद्यपवपवद्यवव पपभपवपवभवव पपष्टपवपवष्टवव पपल्जपवपवल्जवव **uuguauagaa** पपत्भपवपवत्भवव पपह्नपवपवह्नवव पपह्नपवपवह्नवव पपह्मपवपवह्मवव पपह्यपवपवह्यवव पपह्लपवपवह्लवव पपह्नपवपवह्नवव

U/Uu variant spacing

पपहुपवपवहुवव पपहूपवपवहूवव पपहृपवपवहृवव पपहृपवपवहृवव पपहृपवपवहृवव पपहृपवपवहुवव पपहृपवपवहृवव पपरुपवपवरुवव पपरूपवपवरूवव पपदुपवपवदुवव पपदूपवपवदूवव पपदूपवपवदूवव पपदुपवपवदृवव

Vowel sign spacing

पपपंपपरंपपकंपप

पपपापपरापपकापप पपपिपपरिपपकिपप पपपीपपरीपपकीपप पपपींपपरींपपकींपप पपपींपपरींपपकींपप पपपाँपपराँपपकाँपप पपपाँपपराँपपकाँपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपौपपरौपपकौपप पपपौंपपरौंपपकौंपप पपपौंपपरौंपपकौंपप

पपपुपपरुपपकुपप पपपूपपरूपपकूपप पपपृपपरृपपकृपप पपपृपपरूपपकृपप पपपूपपरूपपकूपप पपपूपपरूपपकुपप पपपूपपरूपपकुपप

पपर्पपपर्पपर्कपप पपर्पपपर्रपपर्कपप पपर्पपपर्रपपर्कपप

पपपऽपवपववऽवव पप?पवपव?वव पपप:पवपवव:वव **Numeral spacing**

Letter-punct spacing

पपक, पवक. पपख, पवख. पपग, पवग. पपघ, पवघ. पपङ. पवङ. पपच, पवच. पपछ, पवछ. पपज, पवज. पपझ, पवझ. पपञ, पवञ. पपट, पवट. पपठ, पवठ. पपड, पवड. पपढ, पवढ. पपण, पवण. पपत, पवत. पपथ, पवथ. पपद, पवद. पपध, पवध. पपन, पवन.

पपप, पवप.

पपफ, पवफ. पपब, पवब. पपभ, पवभ. पपम, पवम. पपय, पवय. पपर, पवर. पपल, पवल. पपळ, पवळ. पपव, पवव. पपव, पवव.

पपश, पवश. पपष, पवष. पपस, पवस. पपह, पवह. पपक़, पवक़. पपख़, पवख़.

पपग़, पवग़. पपज़, पवज़. पपड़, पवड़.

पपफ़, पवफ़. पपय़, पवय़. पपक्ष, पवक्ष.

पपज्ञ, पवज्ञ.

पपढ़, पवढ़.

पपअ, पवअ. पपऄ, पवऄ. पपॲ, पवॲ. पपइ, पवइ. पपई, पवई.

पपई, पवई. पपउ, पवउ. पपऊ, पवऊ. पपए, पवए. पपऐ, पवऐ. पपऍ, पवऍ.

पपऎ, पवऎ.

पपआ, पवआ. पपओ, पवओ. पपऔ, पवऔ. पपऋ, पवऋ. पपऋ, पवऋ. पपॡ, पवॡ. पपॡ, पवॡ.

पपङ्ग, पवङ्ग. पपछ्ग, पवछ्र. पपट्र, पवट्र. पपठ्र, पवठ्र. पपड्र, पवड्र. पपढ्र, पवद्र. पपर्र, पवर्र. पपर्र, पवर्र. पपह्र, पवह्र.

पपळू, पवळू.

पपक्त, पवक्त.

पपद्, पवदू. पपट्, पवटू. पपट्ट, पवटू. पपट्ठ, पवट्ट. पपट्ठ, पवट्ट. पपड्ड, पवड्ड. पपड्ड, पवड्ड. पपद्ध, पवद्ध. पपद्स, पवद्स. पपद्ध, पवद्स. पपद्ध, पवद्स.

पपद्ग, पवद्ग.

पपद्ध, पवद्ध.

पपह्न, पवह्द. पपष्ट, पवष्ट. पपल्ज़, पवल्ज़. पपष्ठ, पवष्ठ. पपल्भ, पवल्भ. पपह्ल, पवह्ल. पपह्ल, पवह्ल. पपह्ल, पवह्ल. पपह्ल, पवह्ल.

> पपहु, पवहु. पपहू, पवहू. पपहृ, पवहू. पपहु, पवहू. पपहु, पवहू. पपहू, पवहू. पपरु, पवरू. पपरु, पवरू. पपदु, पवदू. पपदृ, पवदू.

पपख; पवख: पपग; पवग: पपघ; पवघ: पपङ; पवङ: पपच; पवच: पपछ; पवछ: पपज; पवज: पपझ; पवझ: पपअ; पवझ:

पपट: पवट:

पपठः पवठः

पपकः पवकः

पपड; पवड:	पपॲ; पवॲ:	पपड्ढ; पवड्ट:	पपघ। पवघ:	पपड़। पवड़:	पपह्र। पवहः	पपरू। पवरू:
पपढ; पवढ:	पपइ; पवइ:	पपड्डुं; पवड्डुं:	पपङ। पवङ:	पपढ़। पवढ़:	पपळू। पवळू:	पपदु। पवदुः
पपण; पवण:	पपई; पवई:	पपढूँ; पवढूँ:	पपच। पवच:	पपफ़। पवफ़:		पपदूँ। पवदूँ:
पपत; पवत:	पपउ; पवउ:	पपद्धः, पवद्धः	पपछ। पवछ:	पपय्। पवयः	पपक्त। पवक्तः	पपदृ। पवदृः
पपथ; पवथ:	पपऊ; पवऊ:	पपद्ग; पवद्गः	पपज। पवजः	पपक्ष। पवक्ष:	पपदू। पवदूः	
पपद; पवद:	पपए; पवए:	पपद्ध; पवद्धः	पपझ। पवझ:	पपज्ञ। पवज्ञः	पपदृ। पवदृः	-
पपध; पवध:	पपऐ; पवऐ:	पपद्भ; पवद्भः	पपञ। पवञ:		पपट्टे। पवट्टेः	पपक! पवक?
पपन; पवन:	पपऍ; पवऍ:	पपद्वः, पवद्वः	पपट। पवटः	पपअ। पवअ:	पपट्टे। पवट्टेः	पपख! पवख?
पपप; पवप:	पपऎ; पवऎ:	पपद्धः पवद्धः	पपठ। पवठ:	पपञ्ज। पवञ्जै:	पपठ्ठ। पवठ्ठः	पपग! पवग?
पपफ; पवफ:	पपआ; पवआ:	पपद्द; पवद्दः	पपड। पवड:	पपॲ। पवॲ:	पपडूँ। पवडूँ:	पपघ! पवघ?
पपब; पवब:	पपओ; पवओ:	पपष्ट; पवष्टः	पपढ। पवढ:	पपइ। पवइ:	पपडूँ। पवडूँ:	पपङ! पवङ?
पपभ; पवभ:	पपऔ; पवऔ:	पपल्जः; पवल्जः	पपण। पवण:	पपई। पवई:	पपढूँ। पवढूँ:	पपच! पवच?
पपम; पवम:	पपऋ; पवऋ:	पपष्ठ; पवष्ठः	पपत। पवत:	पपउ। पवउ:	पपद्धै। पवद्धैः	पपछ! पवछ?
पपय; पवय:	पपऋ; पवऋ:	पपत्भः; पवत्भः	पपथ। पवथ:	पपऊ। पवऊ:	पपद्गं। पवद्गः	पपज! पवज?
पपर; पवर:	पपऌ; पवऌ:	पपह्न; पवह्नः	पपद। पवदः	पपए। पवए:	पपद्ध। पवद्धः	पपझ! पवझ?
पपलः; पवलः	पपॡ; पवॡ:	पपह्न; पवह्न:	पपध। पवध:	पपऐ। पवऐ:	पपद्भ। पवद्भः	पपञ! पवञ?
पपळ; पवळ:		पपह्न; पवह्न:	पपन। पवन:	पपऍ। पवऍ:	पपद्वं। पवद्वः	पपट! पवट?
पपव; पवव:		पपह्नं; पवह्नं:	पपप। पवप:	पपऎ। पवऎ:	पपद्ध। पवद्धः	पपठ! पवठ?
पपशः; पवशः	पपङ्ग; पवङ्गः		पपफ। पवफ:	पपआ। पवआ:	पपद्। पवद्दः	पपड! पवड?
पपष; पवष:	पपछ्र; पवछ्रः	पपहु; पवहु:	पपब। पवब:	पपओ। पवओ:	पपष्टं। पवष्टं:	पपढ! पवढ?
पपस; पवस:	पपट्र; पवट्र:	पपहूँ; पवहूँ:	पपभ। पवभ:	पपऔ। पवऔ:	पपल्ज। पवल्जः	पपण! पवण?
पपह; पवह:	पपठ्र; पवठ्रः	पपहृं; पवहृं:	पपम। पवम:	पपऋ। पवऋ:	पपष्ठ। पवष्ठः	पपत! पवत?
पपक़; पवक़:	पपड्र; पवड्र:	पपहूं; पवहूं:	पपय। पवय:	पपऋ। पवऋ:	पपत्भ। पवत्भः	पपथ! पवथ?
पपख़; पवख़:	पपढ्र; पवढ्र:	पपहुँ; पवहुँ:	पपर। पवर:	पपल्। पवलः	पपह्ल। पवह्नः	पपद! पवद?
पपग़; पवग़:	पपद्र; पवद्र:	पपहूँ; पवहूँ:	पपल। पवलः	पपॡ। पवॡ:	पपह्ने। पवह्नेः	पपध! पवध?
पपज़; पवज़:	पपर्ः पवरः	पपरु; पवरु:	पपळ। पवळ:		पपह्नं। पवह्नः	पपन! पवन?
पपड़; पवड़:	पपह्नः पवहः	पपरू; पवरू:	पपव। पवव:		पपह्नं। पवह्नः	पपप! पवप?
पपढ़ं; पवढ़ं:	पपळ्र; पवळ्र:	पपदु; पवदु:	पपश। पवश:	पपङ्ग। पवङ्गः	•	पपफ! पवफ?
पपफ़; पवफ़:		पपदूँ; पवदूँ:	पपष। पवष:	पपछ्र। पवछ्रः	पपहु। पवहुः	पपब! पवब?
पपय़; पवय़:	पपक्तः; पवक्तः	पपर्दृ; पवदृः	पपस। पवस:	पपट्र। पवट्रः	पपहूँ। पवहूँ:	पपभ! पवभ?
पपक्ष; पवक्ष:	पपदू; पवदू:		पपह। पवहः	पपठ्र। पवठ्रः	पपह्ने। पवहः	पपम! पवम?
पपज्ञ; पवज्ञ:	पपदृ; पवदृ:	-	पपक्र। पवकः	पपड्र। पवड्र:	पपहूँ। पवहूँ:	पपय! पवय?
•	पपट्ट; पवट्ट:	पपक। पवकः	पपख़। पवख़:	पपद्र। पवद्रः	पपहुँ। पवहुँ:	पपर! पवर?
पपअ; पवअ:	पपट्ठ; पवट्ठः	पपख। पवख:	पपग़। पवग़:	पपद्र। पवद्र: 	पपहूँ। पवहूँ:	पपल! पवल?
पपञ्जै; पवञै:	पपठ्ठ; पवठ्ठः	पपग। पवग:	पपज्ञ। पवज्ञः	पपर्। पवर्ः	पपर्रे। पवरु:	पपळ! पवळ?

पपव! पवव?	पपङ्र! पवङ्र?		पपफ-फपव	पपआ-आपव	पपद्द-द्दपव	"डपवपड"
पपश! पवश?	पपछ्र! पवछ्र?	पपहु! पवहु?	पपब-बपव	पपओ-ओपव	पपष्ट-ष्टपव	"ढपवपढ"
पपष! पवष?	पपट्र! पवट्र?	पपहूँ! पवहूँ?	पपभ-भपव	पपऔ-औपव	पपल्ज-ल्जपव	"णपवपण"
पपस! पवस?	पपठ्र! पवठ्र?	पपहृं! पवहृं?	पपम-मपव	पपऋ-ऋपव	पपष्ठ-ष्ठपव	"तपवपत"
पपह! पवह?	पपड्र! पवड्र?	पपहॄ! पवहॄ?	पपय-यपव	पपऋ-ऋपव	पपत्भ-त्भपव	"थपवपथ"
पपक़! पवक़?	पपद्र! पवद्र?	पपह्र! पवह्र?	पपर-रपव	पपल-लपव	पपह्ल-ह्रपव	"दपवपद"
पपख़! पवख़?	पपद्र! पवद्र?	पपहूँ! पवहूँ?	पपल-लपव	पपॡ-ॡपव	पपह्न-ह्नपव	"धपवपध"
पपग़! पवग़?	पपर्! पवर्?	पपरुं! पवरुं?	पपळ-ळपव		पपह्ल-ह्लपव	"नपवपन"
पपज़! पवज़?	पपह्न! पवह्न?	पपरू! पवरू?	पपव-वपव		पपह्न-ह्नपव	"पपवपप"
पपड़! पवड़?	पपळू! पवळू?	पपदु! पवदु?	पपश-शपव	पपङ्र-ङ्रपव		"फपवपफ"
पपढ़! पवढ़?		पपदूं! पवदूं?	पपष-षपव	पपछ्र-छ्रपव	पपहु-हुपव	"बपवपब"
पपफ़! पवफ़?	पपक्त! पवक्त?	पपर्दृं! पवर्दृं?	पपस-सपव	чч д-дча	पपहूँ-हूँपव	"भपवपभ"
पपय़! पवय़?	पपदू! पवदू?		पपह-हपव	чч д-дча	पपहें-हेंपव	"मपवपम"
पपक्ष! पवक्ष?	पपदृं! पवदृं?	-	पपक़-क़पव	पपड्र-ड्रपव	पपहॄ-हॄपव	"यपवपय"
पपज्ञ! पवज्ञ?	पपट्टे! पवट्टे?	पपक-कपव	पपख़-ख़पव	पपढ़-ढ्रपव	पपहु-हुपव	"रपवपर"
	पपट्ट! पवट्ट?	पपख-खपव	पपग़-ग़पव	чч द्र-द्रपव	पपहूँ-हूँपव	"लपवपल"
पपअ! पवअ?	पपठ्ठं! पवठ्ठं?	पपग-गपव	पपज़-ज़पव	पपर्-रूपव	पपरुं-रुंपव	"ळपवपळ"
पपऄ! पवऄ?	पपडूँ! पवडूँ?	पपघ-घपव	पपड़-ड़पव	पपह्र-ह्रपव	पपरू-रूपव	"वपवपव"
पपॲ! पवॲ?	पपडूँ! पवडूँ?	पपङ-ङपव	पपढ़-ढ़पव	पपळू-ळूपव	पपदु-दुपव	"शपवपश"
पपइ! पवइ?	पपढूँ! पवढूँ?	पपच-चपव	पपफ़-फ़पव		पपदूँ-दूँपव	"षपवपष"
पपई! पवई?	पपद्धं! पवद्धं?	पपछ-छपव	पपय़-य़पव	पपक्त-क्तपव	पपर्दृ-दृंपव	"सपवपस"
पपउ! पवउ?	पपद्ग! पवद्ग?	पपज-जपव	पपक्ष-क्षपव	पपदू-दूपव		"हपवपह"
पपऊ! पवऊ?	पपद्ध! पवद्ध?	पपझ-झपव	पपज्ञ-ज्ञपव	पपदृ-दृपव	-	"क़पवपक़"
पपए! पवए?	पपद्भः पवद्भः?	पपञ-ञपव		पपट्ट-ट्टपव	"कपवपक"	"ख़पवपख़"
पपऐ! पवऐ?	पपद्गे! पवद्गे?	पपट-टपव	पपअ-अपव	पपट्ठ-ट्ठपव	"खपवपख"	"ग़पवपग़"
पपऍ! पवऍ?	पपद्ध! पवद्ध?	पपठ-ठपव	पपऄ-ऄपव	पपठ्ठ-ठुपव	"गपवपग"	"ज़पवपज़"
पपऎ! पवऎ?	पपद्द! पवद्द?	पपड-डपव	पपॲ-ॲपव	पपड्ट-ड्टपव	"घपवपघ"	"ड़पवपड़"
पपआ! पवआ?	पपष्टु! पवष्टु?	पपढ-ढपव	पपइ-इपव	पपड्ड-ड्डपव	"ङपवपङ"	"ढ़पवपढ़"
पपओ! पवओ?	पपल्ज! पवल्ज?	पपण-णपव	पपई-ईपव	पपढ़ु-ढ़ुपव	"चपवपच"	"फ़पवपफ़"
पपऔ! पवऔ?	पपष्ठ! पवष्ठ?	पपत-तपव	पपउ-उपव	पपद्ध-द्धपव	"छपवपछ"	"य़पवपय़"
पपऋ! पवऋ?	पपत्भ! पवत्भ?	पपथ-थपव	पपऊ-ऊपव	पपद्ग-द्गपव	"जपवपज"	"क्षपवपक्ष"
पपऋ! पवऋ?	पपह्न! पवह्न?	पपद-दपव	पपए-एपव	पपद्ध-द्वपव	"झपवपझ"	"ज्ञपवपज्ञ"
पपल्! पवलः?	पपह्नं! पवह्नं?	पपध-धपव	पपऐ-ऐपव	पपद्भ-द्भपव	"ञपवपञ"	
पपॡ! पवॡ?	पपह्नं! पवह्नं?	पपन-नपव	पपऍ-ऍवव	पपद्व-द्वपव	"टपवपट"	"अपवपअ"
· -	पपह्नं! पवह्नं?	पपप-पपव	पपऎ-ऎपव	पपद्ध-द्धपव	"ठपवपठ"	"ऄपवपऄ"

"ॲपवपॲ"	"डुपवपडु"	Num-punct spacing	li Vowel sign - base	पपहिपपहिंपपर्हिपप
"इपवपइ"	"ढूँपवपढूँ"	गरा ३००० सार	पपकिपपकिंपपर्किपप	पपक्षिपपक्षिंपपर्क्षिपप
"ईपवपई"	"द्धपवपद्ध"	पवप ₹१०१ वपव	पपखिपपखिंपपर्खिपप	पपज्ञिपपज्ञिंपपर्ज्ञिपप
"उपवपउ"	"द्गपवपद्ग"	पवप ₹२०१ वपव	पपगिपपगिंपपर्गिपप	
"ऊपवपऊ"	"द्वपवपद्व"	पवप ₹३०१ वपव	पपघिपपघिंपपर्घिपप	
"एपवपए"	"द्भपवपद्भ"	पवप ₹४०१ वपव	पपङिपपङिंपपर्ङिपप	
"ऐपवपऐ"	"द्वपवपद्व"	पवप ₹५०१ वपव	पपचिपपचिंपपर्चिपप	
"ऍपवपऍवव	"द्धपवपद्ध"	पवप ₹६०१ वपव	पपछिपपछिंपपर्छिपप	
"ऎपवपऎ"	"द्दपवपद्द"	पवप ₹७०१ वपव	पपजिपपजिंपपर्जिपप	
"आपवपआ"	"ष्टपवपष्ट"	पवप ₹८०१ वपव	पपझिपपझिंपपर्झिपप	
"ओपवपओ"	"ल्जपवपल्ज"	पवप ₹९०१ वपव	पपञिपपञिंपपर्ञिपप	
"औपवपऔ"	"ष्ठपवपष्ठ"		पपटिपपटिंपपर्टिपप	
"ऋपवपऋ"	"त्भपवपत्भ"	000,080,088	पपठिपपठिंपपर्ठिपप	
"ऋपवपऋ"	"ह्रपवपह्न"	008,080,888	पपडिपपडिंपपर्डिपप	
"ऌपवपऌ"	"ह्रपवपह्न"	007,080,788	पपढिपपढिंपपर्ढिपप	
"ॡपवपॡ"	"ह्रपवपह्न"	003,080,388	पपणिपपणिंपपर्णिपप	
	"ह्रपवपह्न"	008,080,888	पपतिपपतिंपपर्तिपप	
"ङ्रपवपङ्र"		००५,०१०,५११	पपथिपपथिंपपर्थिपप	
"छ्रपवपछ्र"	"हुपवपहु"	006,080,688	पपदिपपदिंपपर्दिपप	
"ट्रपवपट्र"	"हूँपवपहूँ"	006,080,688	पपधिपपधिंपपर्धिपप	
"ठ्रपवपठ्र"	"ह्रपवपह्र"	००८,०१०,८११	पपनिपपनिंपपर्निपप	
"ड्रपवपड्र"	"हृपवपहृ"	००९,०१०,९११	पपपिपपपिंपपर्पिपप	
"द्रपवपद्र"	"हुपवपहु"	000 000 000	पपफिपपफिंपपर्फिपप	
"द्रपवपद्र"	"हूँपवपहूँ"	990.090.000	पपबिपपबिंपपर्बिपप	
"रूपवपरू"	"रुपवपरु"	008.080.888	पपभिपपभिंपपर्भिपप	
"ह्रपवपह्र"	"रूपवपरू"	007.080.788	पपमिपपमिंपपर्मिपप	
"ळ्रपवपळ्र"	"दुपवपदु"	003.090.399	पपयिपपयिंपपर्यिपप	
	"दूपवपदू"	00%,080,888	पपरिपपरिंपपरिंपप	
"क्तपवपक्त"	"दृपवपदृ"	००५.०१०.५११	पपलिपपलिंपपर्लिपप	
"दूपवपदू"		006.080.888	पपळिपपळिंपपळिंपप	
"दृंपवपदृं"		006.080.088	पपविपपविंपपर्विपप	
"ट्टॅपवपट्टॅ"		993.090.300	पपशिपपशिंपपर्शिपप	
"ट्रॅपवपट्टॅ"		999.090.900	पपषिपपषिंपपर्षिपप	
"ठ्ठॅपवपठ्ठ"			पपसिपपसिंपपर्सिपप	
"ਵੱਧਰਧਵੱ"			44101410141	

li Vowel sign	पपक्त्यिपप	पपर्ग्बिपप	पपङ्खींपप	पपछ्विपप	पपर्द्विपप	पपर्सिपप	पपर्सिपप
clusters	पपर्क्त्विपप	पपर्ग्भिपप	पपर्ङ्गिपप	पपर्ज्किपप	पपर्ट्रीपप	पपर्त्मिपप	पपर्खिपप
पपर्क्किपप	पपर्क्विपप	पपर्ग्मिपप	पपङ्गीपप	पपर्ज्जिपप	पपर्ट्विपप	पपर्त्यिपप	पपर्द्रिपप
पपर्क्खिपप	पपक्स्टिपप	पपर्ग्यिपप	पपर्ङ्घिपप	पपर्ज्झिपप	पपट्वींपप	पपर्त्रिपप	पपर्द्विपप
पपर्क्यिपप	पपक्स्डिपप	पपर्ग्रिपप	पपङ्घींपप	पपर्ज्ञिपप	पपर्ट्रिपप	पपर्ल्लिपप	पपर्द्ध्यिपप
पपर्क्यिपप	पपक्स्तिपप	पपर्ग्लिपप	पपर्ङ्चिपप	पपर्ज्तिपप	पपर्ट्रीपप	पपर्त्विपप	पपर्द्विपप
पपक्छिंपप	पपक्स्पिपप	पपर्ग्विपप	पपर्ङ्क्षपप	पपर्ज्दिपप	पपर्ट्रिपप	पपर्त्सिपप	पपर्द्ञ्यिपप
पपर्क्जिपप	पपक्स्प्रिपप	पपर्ग्सिपप	पपङ्क्रीपप	पपर्ज्निपप	पपर्वठ्यपप	पपत्क्यिपप	पपर्ध्किपप
पपर्क्झिपप	पपर्क्सिपप	पपर्ग्धिपप	पपर्ङ्क्रिपप	पपर्ज्बिपप	पपर्ड्विपप	पपर्क्तिपप	पपर्ध्यिपप
पपर्क्टिपप	पपक्स्प्र्लपप	पपर्ग्धिपप	पपर्झिपप	पपर्ज्मिपप	पपर्ड्विपप	पपर्स्सिपप	पपर्ध्निपप
पपर्क्टिपप	पपर्ख्खिपप	पपग्न्यिपप	पपर्ङ्यिपप	पपर्ज्यिपप	पपर्ड्रिपप	पपर्त्खिपप	पपर्ध्यिपप
पपर्क्डिपप	पपर्ख्टिपप	पपग्भिर्यपप	पपर्ङ्रिपप	पपर्ज़िपप	पपईड्यिपप	पपर्त्ख्रिपप	पपर्ध्रिपप
पपर्क्टिपप	पपर्ख्डिपप	पपर्ग्रिपप	पपर्च्किपप	पपर्ज्लिपप	पपर्ढॄिपप	पपर्त्ख्रिपप	पपर्ध्लिपप
पपर्क्णिपप	पपर्ख्णिपप	पपग्म्यिपप	पपर्च्खिपप	पपर्ज्विपप	पपर्ट्टीपप	पपि्र्यिपप	पपर्ध्विपप
पपर्क्तिपप	पपर्ख्निपप	पपग्र्यिपप	पपर्च्चिपप	पपर्झ्किपप	पपर्द्विपप	पपर्त्प्रिपप	पपर्ध्सिपप
पपर्क्थिपप	पपर्ख्दिपप	पपर्छ्यपप	पपर्च्टिपप	पपर्झ्गिपप	पपर्ढ्यिपप	पपर्त्प्लिपप	पपर्न्किपप
पपर्क्टिपप	पपर्ख्निपप	पपर्घ्जिपप	पपर्च्छिपप	पपर्झ्यिपप	पपर्वृट्यिपप	पपत्र्यिपप	पपर्न्खिपप
पपर्क्निपप	पपर्खिपप	पपर्घ्टिपप	पपर्च्डिपप	पपर्झिपप	पपर्ण्टिपप	पपर्त्स्निपप	पपर्न्चिपप
पपर्क्पिपप	पपर्ख्यिपप	पपर्घ्ठिपप	पपर्च्हिपप	पपर्झ्तिपप	पपर्ण्टीपप	पपर्त्स्यिपप	पपर्न्छिपप
पपर्क्षिपप	पपर्ख्यिपप	पपर्घ्डिपप	पपर्च्णिपप	पपर्झ्निपप	पपर्ण्ठिपप	पपर्स्विपप	पपर्न्जिपप
पपर्क्विपप	पपर्ख्रिपप	पपिर्णिपप	पपर्च्तिपप	पपर्झ्यिपप	पपर्ण्डिपप	पपि्रस्त्र्यपप	पपर्झिपप
पपर्क्षिपप	पपर्ख्लिपप	पपर्घ्तिपप	पपर्च्थिपप	पपर्झिपप	पपर्ण्हिपप	पपर्थ्किपप	पपर्न्टिपप
पपर्क्मिपप	पपर्खिपप	पपर्घ्दिपप	पपर्च्दिपप	पपर्झ्लिपप	पपर्णिपप	पपर्थ्यिपप	पपर्न्ठिपप
पपर्क्यिपप	पपर्ख्शिपप	पपर्घ्निपप	पपर्ख्यिपप	पपर्झ्विपप	पपर्ण्तिपप	पपर्थ्मिपप	पपर्न्डिपप
पपर्किपप	पपर्ख्यिपप	पपर्घ्विपप	पपर्जिपप	पपर्झिपप	पपर्ण्यिपप	पपर्थ्यिपप	पपर्न्हिपप
पपर्क्लिपप	पपर्ख्यिपप	पपर्घ्मिपप	पपर्च्यिपप	पपर्ञ्चिपप	पपर्ण्रिपप	पपर्थ्रिपप	पपर्न्तिपप
पपर्क्विपप	पपर्ख्यिपप	पपर्घ्यिपप	पपर्चिपप	पपर्ज्जिपप	पपर्ण्विपप	पपर्थ्लिपप	पपर्स्थिपप
पपक्शिपप	पपर्ग्किपप	पपर्चिपप	पपर्च्लिपप	पपञ्शिपप	पपर्त्किपप	पपर्थ्विपप	पपर्न्दिपप
पपर्क्षिपप	पपर्गिपप	पपर्घ्तिपप	पपर्च्विपप	पपञ्चिंपप	पपर्त्खिपप	पपर्थ्सिपप	पपर्स्थिपप
पपर्क्सिपप	पपर्ग्जिपप	पपर्घ्विपप	पपर्च्सिपप	पपञ्ज्यिपप	पपर्त्तिपप	पपर्द्विपप	पपर्निपप
पपर्क्हिपप	पपर्ग्णिपप	पपर्घ्सिपप	पपर्च्यिपप	पपर्ट्टिपप	पपर्त्थिपप	पपर्द्धिपप	पपर्न्पिपप
पपक्ळिंपप	पपर्ग्तिपप	पपघ्ल्यपप	पपर्च्मिपप	पपर्टीपप	पपर्लिपप	पपर्द्विपप	पपर्न्फिपप
पपक्किर्यपप	पपर्ग्दिपप	पपर्ङ्किपप	पपर्च्यिपप	पपर्ट्विपप	पपर्त्यिपप	पपर्द्धिपप	पपर्न्बिपप
पपर्क्तिपप	पपर्ग्धिपप	पपङ्कींपप	पपर्छ्यिपप	पपर्ट्वीपप	पपर्त्फिपप	पपर्द्धिपप	पपर्भिपप
. 114411	पपर्ग्निपप	पपङ्खिंपप	पपर्छ्रिपप	पपर्ट्यिपप	पपर्त्बिपप	पपर्द्धिपप	पपर्मिपप

पपर्न्यिपप	पपर्धिपप	पपर्म्बिपप	पपर्ल्थिपप	पपर्स्जिपप	पपर्ह्विपप
पपर्व्रिपप	पपर्जिपप	पपर्म्भिपप	पपर्व्हिपप	पपर्स्टिपप	पपर्ळिर्यपप
पपर्ल्लिपप	पपर्प्पिपप	पपर्म्मिपप	पपर्ल्पिपप	पपर्स्टिपप	पपर्ळ्पिपप
पपर्न्विपप	पपर्प्भिपप	पपर्म्यिपप	पपर्ल्फिपप	पपर्स्डिपप	पपर्ळ्विपप
पपर्न्सिपप	पपर्मिपप	पपर्म्रिपप	पपर्ल्बिपप	पपर्स्हिपप	पपर्स्यिपप
पपर्न्हिपप	पपर्य्यिपप	पपर्म्लिपप	पपर्ल्भिपप	पपर्स्तिपप	पपर्स्मिपप
पपर्स्थिपप	पपर्प्रिपप	पपर्म्विपप	पपर्ल्मिपप	पपर्स्थिपप	पपर्स्विपप
पपन्भिर्वेपप	पपर्प्लिपप	पपर्म्शिपप	पपर्ल्यिपप	पपर्स्दिपप	
पपन्म्यिपप	पपर्विपप	पपर्म्सिपप	पपर्ल्लिपप	पपर्स्निपप	
पपन्स्टिपप	पपर्ष्मिपप	पपर्म्हिपप	पपर्ल्विपप	पपर्स्पिपप	
पपन्स्यिपप	पपर्सिपप	पपम्प्यिपप	पपर्ल्सिपप	पपर्स्फिपप	
पपर्ह्यिपप	पपर्ख्विपप	पपर्म्प्रिपप	पपर्ल्हिपप	पपर्स्बिपप	
पपन्ज्यिपप	पपर्प्यिपप	पपर्म्ब्यिपप	पपिल्र्पिपप	पपर्स्मिपप	
पपन्क्सिपप	पपर्फ्किपप	पपर्म्ब्रिपप	पपर्ल्ह्यिपप	पपर्स्यिपप	
पपन्त्र्यपप	पपर्फ्जिपप	पपर्म्थिपप	पपित्रक्यिपप	पपर्स्निपप	
पपर्न्सिपप	पपर्स्टिपप	पपर्भ्भिपप	पपर्व्थिपप	पपर्स्लिपप	
पपर्स्थिपप	पपर्फ्तिपप	पपर्म्विपप	पपर्ल्ड्रिपप	पपर्स्विपप	
पपर्स्थिपप	पपर्प्दिपप	पपर्य्यिपप	पपर्श्किपप	पपर्स्सिपप	
पपर्न्द्रिपप	पपर्म्निपप	पपर्ग्रिपप	पपर्श्खिपप	पपस्म्यिपप	
पपर्न्ह्रिपप	पपर्फ्पिपप	पपर्लिपप	पपर्श्चिपप	पपर्स्क्रिपप	
पपन्ध्यिपप	पपर्म्मिपप	पपर्व्यिपप	पपर्श्छिपप	पपस्त्र्यपप	
पपर्स्थिपप	पपर्प्यिपप	पपर्व्रिपप	पपर्श्टिपप	पपर्स्थिपप	
पपर्स्मिपप	पपर्फ्रिपप	पपर्ल्लिपप	पपर्श्तिपप	पपस्म्यिपप	
पपन्स्म्यपप	पपर्फ्लिपप	पपर्व्सिपप	पपर्श्निपप	पपस्त्विपप	
पपर्किपप	पपर्म्शिपप	पपर्व्हिपप	पपर्श्विपप	पपर्स्प्रिपप	
पपर्स्मिपप	पपर्भ्निपप	पपर्ल्किपप	पपर्श्मिपप	पपस्र्यिपप	
पपर्प्टिपप	पपर्भ्यिपप	पपर्ल्खिपप	पपर्श्यिपप	पपर्ह्लिपप	
पपर्चिपप	पपर्भ्रिपप	पपर्ल्गिपप	पपर्श्रिपप	पपर्ह्तिपप	
पपर्प्टीपप	पपर्श्लिपप	पपर्ल्चिपप	पपर्श्लिपप	पपर्ह्यिपप	
पपर्खिपप	पपर्भ्विपप	पपर्ल्जिपप	पपर्श्विपप	पपर्ह्मिपप	
पपर्व्हिपप	पपर्श्चिपप	पपर्ल्टिपप	पपर्शिपप	पपर्हम्यिपप	
पपर्णिपप	पपर्म्तिपप	पपर्ल्ठिपप	पपर्श्चिपप	पपर्ह्मिपप	
पपर्प्तिपप	पपर्म्दिपप	पपर्ल्डिपप	पपर्स्किपप	पपर्ह्रिपप	
पपर्थिपप	पपर्म्निपप	पपर्ल्डिपप	पपर्स्खिपप	पपर्ह्लिपप	
पपर्प्हिपप	पपर्म्पिपप	पपर्ल्तिपप	पपर्स्छिपप	पपर्ह्मिपप	
				•	

प

Half-to-base kerns

पपक्कपपक्खपपक्गपपक्घपपक्डपपक्चप पक्छपपक्जपपक्झपपक्ञपपक्टपपक्ठपपक्डप पक्डपपक्णपपक्तपपक्थपपक्दपपक्थपपक्नप पक्नपपक्पपपक्फपपक्बपपक्भपपक्मपपक्यप पक्रपपक्रपपक्लपपक्छपपक्वप पक्शपपक्षपपक्सपपक्हपपक्कपपक्खपपक्गप पक्जपपक्डपपक्डपपक्फपपक्यपप

पपक्कपपख्खपपखापपख्यपपख्डपपख्यप पख्डपपख्जपपख्झपपख्अपपख्डप पद्धपपख्णपपख्जपपख्थपपख्डप पद्भपपख्मपपख्कपपख्अपपख्मपपख्यप पद्भपपख्मपपख्कपपख्कपपख्कपपख्मप पख्मपप्रस्मपप्रस्मपपख्कपपख्कपपख्मप पख्डपपख्झपपख्कपपख्यपप

पपग्कपपग्खपपग्गपप पग्छपपग्जपपग्झपपग्ञपपग्डपपग्छपपग्डप पग्डपपग्णपपग्कपपग्खपपग्भपपग्भपपग्यपपग्रप पग्तपपग्लपपग्कपपग्खपपग्भपपग्भपपग्यपपग्रप पग्सपपग्हपपग्कपपग्खपपग्गपपग्झपपग्रप पग्सपपग्हपपग्कपपग्खपपग्गपपग्जपपग्डप पग्डपपग्रकपपग्यपप

पपच्कपपच्खपपच्चापपच्चपपच्डपपच्छप पच्छपपच्जपपच्झपपच्ञपपच्टपपच्छपपच्डप पच्डपपच्चापपच्कपपच्यपपच्छपपच्यप पच्नपपच्यपपच्कपपच्खपपच्यप पच्चपपच्सपपच्सपपच्छपपच्छप पच्चपपच्सपपच्सपपच्हपपच्कपपच्छपपच्याप पच्जपपच्डपपच्डपपच्कपपच्यप पपक्कपपच्खपपच्यपपच्यपपच्छपपच्यप पच्छपपच्जपपच्झपपच्अपपच्टपपच्छप पच्ढपपच्णपपच्कपपच्थपपच्यपपच्यप पज्जपपच्यपपच्कपपच्अपपच्यप पज्जपपच्यपपच्लपपच्छपपच्यपपच्शप पच्यपपच्सपपच्हपपच्कपपच्छपपच्यपप्रजप पच्डपपच्छपपच्कपपच्यपप

पपछकपपछखपपछगपपछघपपछङपपछचप पछछपपछजपपछझपपछञपपछटपपछठप पछडपपछढपपछणपपछतपपछथपपछदप पछधपपछनपपछनपपछपपछफपपछबप पछभपपछमपपछ्चपपछूपपछऱपपछलप पछळपपछ्कपपछ्चपपछशपपछ्मप पछहपपछकपपछखपपछगपपछजपपछड़प पछढपपछकपपछखपप

पपज्कपपज्खपपज्गपपज्घपपज्ङपपज्चप पज्छपपज्जपपज्झपपञ्चपपज्टपपज्छप पज्हपपज्णपपज्तपपज्थपपज्सपपज्मप पज्नपपज्पपपज्भपपज्बपपज्भपपज्यप पज्जपपज्यपज्लपपज्छपपज्छपपज्यपपज्शप पज्यपपज्सपपज्हपपज्कपपज्खपपज्गपपज्जप पज्डपपज्सपपज्सपपज्यपप

पपइकपपइखपपइगपपइघपपइङपपइचप पइछपपइजपपइझपपइञपपइटपपइठपपइटप पइटपपइग्गपपइतपपइथपपइदपपइथपपइनप पइनपपइमपपइमपपइबपपइभपपइमपपइयप पझपपइसपपइलपपइळपपइलपपइशप पइमपपइसपपइहपपइकपपइखपपइग्गपपइजप पइहपपइट्रपपइसपपइसपप पपञ्कपपञ्खपपञ्गपपञ्घपपञ्झपपञ्चप पञ्छपपञ्जपपञ्झपपञ्जपपञ्दपपञ्छपपञ्झप पञ्दपपञ्गपपञ्तपपञ्थपपञ्दपपञ्धपपञ्नप पञ्नपपञ्मपपञ्कपपञ्कपपञ्मपपञ्चप पञ्चपपञ्सपपञ्कपपञ्कपपञ्चपपञ्जप पञ्चपपञ्सपपञ्हपपञ्कपपञ्खपपञ्जप पञ्झपपञ्दपपञ्कपपञ्चपप

पपट्कपपट्खपपट्गपपट्घपपट्डपपट्चप पट्छपपट्जपपट्झपपट्ञपपट्टपपट्टप पट्ढपपट्णपपट्तपपट्थपपट्दपपट्धपपट्नप पट्नपपट्पपपट्फपपट्बपपट्भपपट्चप पट्नपपट्रपपट्लपपट्ळपपट्कपपट्गप पट्षपपट्सपपट्हपपट्कपपट्खपपट्गप पट्डपपट्कपपट्झप

पपठ्कपपठ्खपपठ्गपपठ्घपपठ्डपपठ्चप पठ्छपपठ्जपपठ्झपपठ्ञपपठ्टपपठ्ठप पठ्डपपठ्णपपठ्तपपठ्थपपठ्दपपठ्धपपठ्नप पठ्नपपठ्पपपठ्फपपठ्बपपठ्भपपठ्मपपठ्यप पठ्नपपठ्रपपठ्लपपठ्ळपपठ्ळपपठ्वपपठ्शप पठ्षपपठ्सपपठ्हपपठ्कपपठ्खपपठ्गपपठ्जप पठ्डपपठ्डपपठ्कपपठ्यपप

पपड्कपपड्खपपड्गपपड्घपपड्डपपड्चप पड्छपपड्जपपड्झपपड्ञपपड्टपपड्ठपपड्डप पड्डपपड्णपपड्तपपड्थपपड्दपपड्धपपड्नप पड्नपपड्पपपड्फपपड्बपपड्भपपड्मपपड्यप पड्रपपड्रपपड्लपपड्ळपपड्ळपपड्वपपड्शप पड्षपपड्सपपड्हपपड्कपपड्खपपड्गपपड्जप पड्डपपड्सपपड्कपपड्खपपड्गपपड्जप

पपढ्कपपढ्खपपढ्गपपढ्घपपढ्ङपपढ्चप पढ्छपपढ्जपपढ्झपपढ्ञपपढ्टपपढ्ठपपढ्डप पढृपपढ्णपपढ्तपपढ्थपपढ्दपपढ्धपपढ्नप पढ्नपपढ्पपपढ्फपपढ्बपपढ्भपपढ्मपपढ्यप पढ्नपपढ्रपपढ्लपपढ्ळपपढ्ञपपढ्शप पढ्षपपढ्सपपढ्हपपढ्कपपढ्खपपढ्गपपढ्जप पढ्डपपढ्डपपढ्डपपढ्कपप

पपण्कपपण्खपपण्गपपण्घपपण्डपपण्चप पण्छपपण्जपपण्झपपण्ञपपण्टपपण्डप पण्नपपण्पपण्कपपण्खपपण्कपपण्यप पण्नपपण्पपण्कपपण्ळपपण्कपपण्यप पण्नपपण्सपपण्हपपण्कपपण्खपपण्जप पण्डपपण्डपपण्कपपण्कपपण्जप पण्डपपण्डपपण्कपपण्यपप

पपत्कपपत्खपपतगपपत्यपपत्ङपपत्यपपत्छप पत्नपपत्झपपत्ञपपत्टपपत्ठपपत्डपपत्वपपत्णप पत्तपपत्थपपत्दपपत्थपपत्नपपत्नपपत्पपत्भप पत्बपपत्भपपत्मपपत्यपपत्रपपत्त्रपपत्लपप पत्कपपत्वपपत्शपपत्सपपत्सपपत्हपपत्कपपत्खप पत्गपपत्नपपत्इपपत्कपपत्सपपत्यपप

पर्द्धततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्म तक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मत तक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मत तक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मत तक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मत तक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मत तक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मततक्ष्मत पपद्कपपद्खपपद्वपपद्वपपद्चप पद्छपपद्जपपद्झपपद्ञपपद्टपपद्ठप पद्डपपद्टपपद्णपपद्तपपद्थपपद्वप पद्नपपद्नपपद्पपपद्फपपद्वपपद्वप पद्नपपद्नपपद्पपद्कपपद्ळपपद्वप पद्शपपद्षपपद्सपपद्हपपद्कपपद्खप पद्शपपद्जपपद्डपपद्कपपद्खप पद्शपपद्जपपद्डपपद्कपपद्यप

पपन्कपपन्खपपन्गपपन्घपपन्ङपपन्चपपन्छप पन्जपपन्झपपन्ञपपन्टपपन्ठपपन्डपपन्ढप पन्णपपन्तपपन्थपपन्दपपन्धपपन्नपपन्नपपन्यप पन्फपपन्बपपन्भपपन्मपपन्यपपन्नपपन्त्रपपन्लप पन्ळपपन्ळपपन्वपपन्शपपन्षपपन्सपपन्हपपन्कप पन्खपपन्गपपन्जपपन्डपपन्कपपन्सपपन्यपप

पपत्कपपत्खपपत्गपपत्खपपत्ङपपत्खपपत्खप पत्जपपत्झपपत्ञपपत्टपपत्ठपपत्डपपत्खप पत्गपपत्तपपत्थपपत्दपपत्थपपत्नपपत्नपपत्य पपत्फपपत्खपपत्थपपत्सपपत्यपप्चपपत्त्रपपत्लप पत्ळपपत्ळपपत्वपपत्शपपत्सपपत्सपपत्हपपत्कप पत्खपपत्ञपपत्जपपत्डपपत्कपपत्सपपत्सपप

पपप्कपपप्खपपपापपध्यपपप्कपपप्चपपप्छप पप्जपपप्झपपप्जपपप्टपपप्ठपपप्डपपप्यपपाप पप्तपपध्यपपप्दपपध्यपप्रपप्जपपप्जपपप्कप पप्जपपप्कपपप्यपप्रपपप्रपप्लपपप्कप पप्जपपप्वपप्शपपप्कपपप्सपपप्हपपप्कपपप्खप पपापपप्जपपप्डपपप्कपप्रप्यपप पपफ्कपपफ्खपपफापपफ्यपपफ्डपपफ्चप पफ्छपपफ्जपपफ्झपपफ्ञपपफ्टपपफ्ठपपफ्डप पफ्टपपफ्णपपफ्तपपफ्थपपफ्दपपफ्शपपफ्नप पफ्नपपफ्पपपफ्फपपफ्बपपफ्शपपफ्यप पफ्रपपफ्रपपफ्लपपफ्ळपपफ्ळपपफ्डपपफ्शप पफ्षपपफ्सपपफ्हपपफ्कपपफ्डपपफ्जप पफड्पपफ्डपपफ्कपपफ्सपप

पपक्कपपब्खपपब्गपपब्धपपव्झपपव्यपपब्छप पक्जपपव्झपपव्सपपद्धपपव्झपपव्झपपव्मप पव्जपपव्भपपव्सपपव्यपपत्नपपव्झपपव्झपपव्सप पव्झपपव्भपपव्सपपव्सपपव्झपपव्झपपव्झप पव्झपपव्झपपव्झपपव्सपपव्झपप प्रवापपञ्जपपव्झपपव्झपपक्सपप

पपभ्कपपभ्खपपभापपभ्घपपभ्ङपपभ्चपपभ्छप पभ्जपपभ्झपपभ्ञपपभ्दपपभ्छपपभ्डपपभ्रप पभ्जपपभ्कपपभ्खपपभ्शपपभ्मपपभ्यपपभ्रप पभ्यपपभ्कपपभ्खपपभ्शपपभ्मपपभ्यपपभ्रप पभ्सपपभ्रपपभ्कपपभ्खपपभापपभ्जपपभ्रप पभ्रपपभ्कपपभ्कपपभ्खपपभापपभ्जपपभ्रप पभ्रपपभ्कपपभ्यपप

पपम्कपपम्खपपम्गपपम्घपपम्ङपपम्चपपम्छप पम्जपपम्झपपम्ञपपम्टपपम्छपपम्डपपम्दप पम्णपपम्तपपम्थपपम्दपपम्थपपम्नपपम्नपपम्यप पम्कपपम्खपपम्भपपम्भपपम्यपपम्रपपम्रपपम्लप पम्कपपम्खपपम्गपपम्जपपम्झपपम्सपपम्हप पम्कपपम्खपपम्गपपम्जपपम्झपपम्द्रपपम्फप पम्यपप

पपय्कपपय्खपपयापपय्घपपय्ङपपय्घपपय्छप पय्जपपय्झपपय्अपपय्टपपय्ठपपय्डपपय्खप पय्जपपय्नपप्थ्यपपय्सपपय्यपप्रयपप्रयपय्लप पय्कपपय्खपपय्भपपय्शपपय्भपप्यपप्रयप्यस्प पय्कपप्रखपप्यापप्रापप्यपप्यपप्यस्प प्रयाप

पपर्कपपर्खपपर्गपपर्घपपर्ङपपर्चपपर्छपपर्जप पर्झपपर्ञपपर्टपपर्ठपपर्डपपर्ढपपर्णपपर्तपपर्थप पर्दपपर्थपपर्नपपर्नपपर्पपपर्फपपर्बपपर्भपपर्मप पर्यपपर्रपप्रत्रपपर्लपपर्ळपपर्ळपपर्वपपर्शप पर्षपपर्सपपर्हपपर्कपपर्खपपर्गपपर्जपपर्डपपर्ढप पर्फपपर्यपप

पपक्कपपखपपगपपञ्चपपङ्कपपचपपञ्छप पन्जपपझपपन्अपपन्टपपन्ठपपङ्कपपन्यपम्भप पन्तपपञ्चपपन्सपपन्यपप्रूपपन्नपपन्नपपञ्कप पञ्जपपन्वपपन्शपपन्यपपन्सपपन्हपपक्रपपन्खप पग्गपपञ्जपपन्डपपन्कपपम्भपप्यपप

पपत्कपपत्खपपत्नापपत्घपपत्ङपपत्त्चपपत्छप पत्जपपत्झपपत्ञपपत्टपपत्ठपपत्डपपत्दप पत्जपपत्तपपत्थपपत्दपपत्थपपत्नपपत्नप पत्नपपत्कपपत्वपपत्थपपत्नपपत्नप पत्नपपत्कपपत्वपपत्थपपत्वपपत्थप पत्नपपत्कपपत्कपपत्वपपत्थपपत्थप पत्सपपत्हपपत्कपपत्खपपत्नापपत्जपपत्डप पत्दपपत्कपपत्यपप पपळकपपळखपपळगपपळघपपळङपपळचप पळछपपळजपपळझपपळञपपळटपपळठप पळडपपळढपपळणपपळतपपळथपपळदप पळधपपळनपपळऩपपळपपपळफपपळबप पळभपपळमपपळयपपळपपळलपपळलप पळअपपळवपपळशपपळषपपळसपपळहप पळकपपळखपपळगापपळजपपळइप पळकपपळफपपळखपप

पपळकपपळखपपळगपपळघपपळङपपळचप पळछपपळजपपळझपपळञपपळटप पळडपपळढपपळणपपळतपपळथपपळदप पळधपपळनपपळनपपळपपळपपळप पळभपपळमपपळयपपळपपळपपळलप पळळपपळकपपळवपपळशपपळषप पळहपपळकपपळखपपळग्रापपळजपपळइप पळढपपळकपपळखपप

पपश्कपपश्खपपश्गपपश्चपपश्ङपपश्चपपश्छप पश्जपपश्झपपश्ञपपश्टपपश्ठपपश्डपपश्ढप पश्णपपश्तपपश्थपपश्दपपश्धपपश्नप पश्पपपश्कपपश्बपपश्भपपश्मपपश्यपपश्चप पश्रपपश्लपपश्ळपपश्ळपपश्चपपश्चप पश्सपपश्हपपश्कपपश्खपपश्गपपश्जपपश्डप पश्दपपश्कपपश्यपप पपष्कपपष्खपपषापपष्घपपष्डपपष्कपपष्कप पष्जपपष्मपपष्मपपष्यपपष्रपपष्नपपष्मप पष्जपपष्मपपष्मपपष्यपपष्रपपष्नपपष्मप पष्जपपष्मपपष्मपपष्यपपष्रपपष्नपपष्कप पष्जपपष्मपप्रमपष्यपपष्रपपष्नपपष्कप पष्खपपषापप्रमपष्ठप

पपस्कपपस्खपपस्गपपस्थपपस्ङपपस्चप पस्छपपस्जपपस्झपपस्ञपपस्टपपस्ठपपस्डप पस्डपपस्णपपस्तपपस्थपपस्दपपस्थपपस्नप पस्नपपस्पपपस्फपपस्बपपस्भपपस्मपपस्यप पस्नपपस्तपपस्लपपस्ळपपस्छपपस्वपपस्शप पस्थपपस्सपपस्हपपस्कपपस्खपपस्गपपस्जप पस्डपपस्डपपस्कपपस्यपप

पपह्कपपह्खपपह्मपपह्यपपह्डपपह्चपपह्छप पह्जपपह्झपपह्अपपहटपपह्ठपपह्डपपह्डप पह्लपपह्तपपह्थपपह्दपपह्थपपह्लपपह्मपप्ट्मप पह्मपपह्बपपह्भपपह्मपपह्मपपह्मप पह्ळपपह्ळपपह्लपपह्शपपह्मपपह्सपपह्हप पह्कपपह्खपपह्मपपह्जपपह्डपपह्डप पह्मपपह्यपप

पपक्ष्कपपक्ष्खपपक्ष्मपपक्ष्घपपक्ष्डपपक्ष्चप पक्ष्छपपक्ष्जपपक्ष्झपपक्ष्ञपपक्ष्टपपक्ष्ठपपक्ष्डप पक्ष्डपपक्ष्णपपक्ष्तपपक्ष्थपपक्ष्यपपक्ष्मपप पक्ष्पपपक्ष्मपपक्ष्बपपक्ष्मपप पपक्ष्यपपक्ष्मप पक्ष्ठपपक्ष्मपवपपक्ष्शपप पपक्षपपक्ष्मपपक्ष्मप

less common half-forms

पपटकपपटखपपरगपपट्यपपटहपपट्यपपरछप परजपपरझपपरअपपरटपपरठपपरहपपरढप परगपपरतपपरथपपरदपपरथपपरजपपरगप पर्कपपरबपपरभपपरमपप पपरयपपरलप परळपपरगपवपपरशपप पपरशपपरसपपरहपप

पपद्मकपपद्मखपपद्मगपपद्मघपपद्मङपपद्मचपपद्मछप पद्मजपपद्मझपपद्मञपपद्मटपपद्मठपपद्मडपपद्मढप पद्मणपपद्मतपपद्मथपपद्मदपपद्मधपपद्मनपपद्मपप पद्मफपपद्मबपपद्मभपपद्ममपप पपद्मयपपद्मलप पद्मळपपद्मपपवपपद्मशपपपद्मषपपद्मसपपद्महपप

पपरक्रपपरखपपरगपपर्थपपरहरपपर्थपपरछप परजपपरस्पपरक्रपपरद्यपपर्थपपरहपपरद्यप परगपपरतपपरथपपरद्यपपर्थपपरतपपर्मप पर्मपपरबपपरभपपरमपप पपरयपपरलप परळपपरमपवपपरशपप पपरभपपरसपपरसपप

पपक्रकपपक्रखपपक्रगपपक्रघपपक्रङपपक्रचप पक्रछपपक्रजपपक्रझपपक्रञपपक्रटपपक्रठप पक्रडपपक्रटपपक्रणपपक्रतपपक्रथपपक्रदप पक्रधपपक्रनपपक्रपपपक्रफपपक्रबपपक्रभपपक्रमप पपक्रयपपक्रलपपक्रळपपक्रपपवपपक्रशप पपक्रयपपक्रसपपक्रहपप

पपर्क्रपपर्व्खपपर्व्वापपर्व्यपपर्व्डपपर्व्यप पर्व्छपपर्व्जपपर्व्ह्रापपर्व्वपपर्व्वपपर्व्वपपर्व्धप पर्व्ह्रपपर्व्वपपर्व्वपपर्व्वपपर्व्वपपर्व्धप पर्व्वपपर्व्वपपर्व्वपपर्व्वपपर्व्वपपर्व्वप पर्व्यपपर्व्वपपर्व्वपपर्व्वपपर्व्वपपर्व्वप पर्व्वपपर्व्वसपर्व्ह्रपप पपःक्रपपःख्रपपःग्रापपःश्रपपःख्रपपःख्रप पःज्ञपपःख्रपपःश्रपपःख्रपपःख्रप पःग्रापपःत्रपपःश्रपपःख्रपपःश्रपपःग्रप पःग्रपपःख्रपपःश्रपपःग्रपपःखप पःग्रपपःखपपःश्रपप पपःश्रपपःख्रपपःखप पःग्रपवपपःश्रापप पपःश्रपपःख्रपपः

पपज्रकपपज्रखपपज्रापपज्रवपपज्रवपपज्रवप पज्रापपज्रवपपज्रवपपज्रवपज्रवपपज्रवप पज्रापपज्रवपपज्रथपपज्रवपपज्रवप पज्रकपपज्रवपपज्रीपपज्रवपपज्रवप पज्रवपज्रवपपज्रवपपज्रवपपज्रवप पज्रवपपज्रवपपज्रवपपज्रवपपज्रवप

पपइक्रपपइख्यपइग्गपपइध्यपइह्मपपइख्यप पइछ्यपइज्ञपपइद्गपपइञ्जपपइट्यपइध्यपइद्मप पइट्यपइग्गपपइतयपइध्रपपइध्रपपइभ्मप पइम्मपपइक्रपपइभ्मपपइभ्मपप पपइस्मप पइल्लपपइळ्यपइभ्मपवपपइश्लापपइश्लपपइस्मप पइह्मप

पपञ्कपपञ्खपपञ्चापपञ्चापपञ्चप पञ्छपपञ्जपपञ्चापपञ्जपपञ्चप पञ्चपपञ्चपपञ्चापपञ्जपपञ्चप पञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपप पञ्चपप पपण्कपपण्खपपण्गपपण्घपपण्डपपण्चपपण्छप पण्जपपण्झपपण्ञपपण्टपपण्ठपपण्डपपण्डप पण्णपपण्जपपण्थपपण्दपपण्धपपण्जप पण्कपपण्जपपण्भपपण्मपप पपण्यपपण्जप पण्ळपपण्णपवपपण्शपप पपण्णपण्सपपण्हपप

पपःक्रपपःखपपञापपश्चपपःखपपःखप पञ्जपपञ्चपपञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपश्चपपञ्चपपश्चपपञ्चप पञ्चपपञ्चपप पपञ्चपपञ्जपपञ्चपप्यप्य पञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपः पञ्चपपञ्चपपञ्चपपः

पपश्र्वपपश्र्वपपश्रापपश्र्वपपश्र्वपपश्र्वपपश्र्वप पश्र्वपपश्र्वपपश्र्वपपश्र्वपपश्र्वपपश्र्वप पश्र्मपपश्र्वपपश्र्मपप पपश्र्यपपश्र्वप पश्र्मपश्र्वपपश्र्मपप पपश्र्यपपश्र्मप पश्र्वपश्र्मपवपपश्रापप पपश्र्वपपश्र्मपपश्र्मप

पप्रक्रपप्रख्रपप्रापप्रथ्यपप्रस्पप्रख्रपप्रथप प्रजपप्रसपप्रअपप्रदपप्रथपप्रसपप्रथप प्रणपप्रतपप्रथपप्रसपप्रथपप्रमप प्रक्रपप्रसपप्रभपप्रमपप पप्रथपप्रसप प्रसप्रथपप्रमप्रथपप्रसप्प

पपन्क्रपपन्खपपनापपन्चपपन्छप पन्जपपन्झपपन्अपपन्दपपन्छपपन्छप पन्जापपन्नपपन्थपपन्दपपन्थपपन्नपपन्मप पन्जपपन्भपपन्मपप पपन्यपपन्नपपन्अपपन्मप वपपन्थपप पपन्थपपन्सपपन्हपप

पप्रक्रपप्रखपप्रापप्रघपप्रङ्गपप्रचपप्रखप प्रजपप्रझपप्रञपप्रटपप्रजपप्रहपप्रखप प्रजपप्रथपप्रद्भपप्रथपप्रनपप्रपप्रफपप्रबप प्रभपप्रमपप पप्रयपप्रलपप्रखपप्रप्रपवप प्रशपप पप्रथपप्रसपप्रह्मपप

पपप्रकपपप्रखपपप्रगपपप्रघपपप्रङपपप्रचप पप्रखपपप्रजपपप्रझपपप्रञपपप्रटपपप्रठप पप्रडपपप्रखपपप्रणपपप्रतपपप्रथपपप्रदपपप्रथप पप्रनपपप्रयपपप्रकपपप्रखपपप्रभपपप्रमपप पपप्रयपपप्रलपपप्रखपपप्रथपपप्रशपप पपप्रथपपप्रलपपप्रहपप

पपक्रमपब्रखपपब्रापपब्र्घपपब्र्डपपब्र्घपपब्र्धप पब्र्जपपब्र्सपपब्र्मपपब्र्टपपब्र्डपपब्र्धप पब्र्णपपब्र्मपपब्र्धपपब्र्सपपब्र्मपपब्रमप पब्र्बपपक्रमपपब्रमपप पपब्र्यपपब्र्सपपब्र्यपव पपक्षापप पपब्र्षपपब्रस्मप